

धर्मसंकट

युगो युगो से, मनु के मन में, बसा हुआ व्यवधान,
धर्म की रक्षा करें, या वचन करे सम्मान,
जब धर्म वचन के बीच का पुल, टूट जाए भगवान,
कैसे नदिया पार करें हम, हमें दीजिए ज्ञान।

वचनबद्ध होकर के, जब श्री राम अयोध्या छोड़ गए,
वृद्ध हुए श्री दशरथ जी के, हाथ, हृदय को तोड़ गए।
पुत्र धर्म के कहता है, वृद्ध मात पितु के कार्य करो,
युवराज वचन ये कहता है, महाराज आदेश स्वीकार करो।
रघुकुल की यह रीत पुरानी, प्राण जाए पर वचन नहीं,
मनु धर्म की भी वही कहानी, धर्म करो, लगे गलत सही।
जब धर्म वचन के बीच में, हो द्वेष का आदान,
कैसे अपना कर्म करें हम, हमें दीजिए ज्ञान।

जब गंगा पुत्र श्री देवव्रत ने, ब्रह्मचर्य को अपनाया था,
भीष्म नाम से सुशोभित हुए, और पुत्र धर्म निभाया था।
युवराज धर्म यह कहता है, कि प्रजा दायित्व निर्वाह करो,
और पुत्र धर्म यह कहता है, पिता चाह की प्रवाह करो।
वचन कारण भीष्म ने महाराज निर्देश सम्मान किया,
तो अधर्म के संगी बने, और प्राण का बलिदान दिया।
वचन के काले पट्टे से, गर निरर्थक हो अंजाम,
कैसे अपने नजर उजाले हम, हमें दीजिए ज्ञान।

श्री कृष्ण ने जब वचन दिया, कि नहीं उठेंगे अस्त्र,
अस्त-व्यस्त तब काल हुआ, और गूंजी सृष्टि समस्त
कृष्ण धर्म यह कहता है, कि अधर्मी को परास्त करो,
कृष्ण वचन यह कहता है, कि कुछ भी हो बर्दाश्त करो।
किंतु अधर्म से परेशान होकर जब कृष्ण ने पहिया उठाया
था,

तब धर्म वचन के महाजाल में, खुद को ही उलझा पाया था।
इंसान धर्म और वचन में, जब चुनना नहीं आसान,
ऐसे कैसे इंसान बने हम, हमें दीजिए ज्ञान।

जब यम ले करके जा रहे थे, सत्यवान के प्राण,
तब सावित्री की निष्ठा कारण, उन्हें दिया वरदान।
यमराज धर्म यह कहता है, मृतक प्राण जाए पवित्री को,

यमराज वचन यह कहता है, कि 100 पुत्र हो सावित्री को।
किंतु प्रकृति नियम से, वृक्ष बिना अंकुर नहीं,
जब वचन धर्म को काटे, तब भी क्या धर्म मंजूर नहीं?
इस वचन धर्म के संकट पे, अब प्रभु दीजिए ध्यान,
कैसे धर्म निभाए हम, हमें दीजिए ज्ञान।

गर वचन को हम तीर कहे, तो धर्म कहे कमान,
गर वचन को हम देह कहे, तो धर्म कहेगा प्राण।
वचन बड़ा या धर्म बड़ा है हमें नहीं संज्ञान,
ज्ञान चक्षु खोलकर, प्रभु हमें दीजिए ज्ञान,
प्रभु हमें दीजिए ज्ञान।

---बिधान आर्य